# पाश की कविता

## बेदखली के लिये विनयपत्र

**मैंने** उम्र-भर उसके ख़िलाफ़ सोंचा और लिखा है
अगर उसके अफ़सोस में पूरा देश ही शामिल है
तो इस देश से मेरा नाम खारिज कर दें
मैं खूब जानता हूं नीले सागरों तक फ़ैले हुए
इस खेतों, खानों, भट्ठों के भारत को-
वह ठीक इसी का साधारण-सा एक कोना था
जहां पहली बार
जब दिहाड़ी मज़दूर पर उठा थप्पड़ मरोड़ा गया
किसी के खुरदरे बेनाम हाथों में
ठीक वही वक्त था
जब इस कत्ल की साजिश रची गई
कोई भी पुलिस नहीं खोज पाएगी
इस साजिश की जगह
क्योंकि ट्यूबें सिर्फ़ राजधानी में जगमगाती हैं
और खेतों, खानों व भट्ठों का भारत बहुत अंधेरा है

और ठीक इसी सर्द अंधेरे में होश संभालने पर
जीने के साथ-साथ
पहली बार जब इस जीवन के बारे में
सोचना शुरू किया
मैंने खुद को इस कत्ल की
साजिश में शामिल पाया
जब भी वीभत्स शोर का खुरा खोज मिटाकर
मैंने टर्राते हुए टिड्डे को ढूंढना चाहा
अपनी पूरी दुनिया को शामिल देखा है
मैने हमेशा ही उसे कत्ल किया है
हर परिचित की छाती में ढूंढकर
अगर उसके कातिलों को इस तरह
सड़कों पर देखा जाना है
तो मुझे भी मिले बनती सज़ा
मैं नहीं चाहता कि सिर्फ़ इस आधार पर बचता रहूं
कि भजनलाल बिशनोई को मेरा पता मालूम नहीं

इसका जो भी नाम है-गुंडों की सल्तनत का
मैं इसका नागरिक होने पर थूकता हूं
मैं उस पायलट की
चालाक आंखों में चुभता भारत हूं
हां, मैं भारत हूं चुभता हुआ उसकी आंखों में
अगर उसका अपना कोई खानदानी भारत है
तो मेरा नाम उसमें से अभी खारिज कर दो।

## ये लुटेरे

कुछ ऐसे वरदी वाले हैं
जो हम पर रोब जमाते हैं
कुछ मजहब के रखवाले हैं
जो नाहक खून बहाते हैं
हर मेहनत कश ने हाथों में
अब थामें सुर्ख फ़रेरे है
सरमायादार लुटेरे हैं
न तेरे हैं न मेरे हैं

ये दानिशवर हक लिखने पर
जिन्दाओं में डाले जाते हैं
ये जाहिल लोग हकूमत में
काले कानून बनाते हैं
इन अहल हुक्म की सोचों में
अब तक तारीक सवेरे है
ये सरमायादार लुटेरे हैं
न तेरे हैं न मेरे हैं

ये मां की दौलत लुटते हैं
और फ़िर भी शान से जीते हैं
जो खून हमारा पीते हैं
इस खून के दम से कायम है
जो इनके ऊंचे डेरे हैं
सरमायादार लुटेरे हैं
न तेरे हैं न मेरे हैं

यूं कब तक हाथ पर हाथ धरे
हम बैठे अश्क बहायेंगे
तुम देखना इक दिन हम मिलकर
हर जुल्म से टकरायेंगे
इनकी करतूतों के बायस
इन देसों ये आज अंधेरे हैं
सरमायादार लुटेरे है

न तेरे हैं न मेरे हैं
वो दिन भी आयेगा
जो देशों में खुशियां लायेगा
हर दहकां हर मज़दूर यहां
फ़िर एक तराना गायेगा
ये मिलें भी ये डेरे भी
सब मेरे हैं हां मेरे हैं
सरमायादार लुटेरे हैं
न तेरे है न मेरे हैं

**-डॉ. ताहिर शब्बीर 'लाहौर**

# गरीबों के भोजन में बड़ी सेंधमारी उज़ागर

**पलवल ( म.मो. )** बीपीएल यानी ग़रीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालों के लिये सरकार ने 2 रुपये प्रति किलो गेहूं के अलावा सस्ते चावल, दाल व तेल आदि का प्रबन्ध किया है। इस प्रबन्ध पर सरकार अरबों रुपया बहा रही है, परन्तु वह रुपया जा कहां रहा है उसे देखने वाला कोई नहीं।

अकेले छोटे से ज़िले पलवल से सालाना सैंकड़ों ट्रक इन खाद्य सामग्रियों के खुले बाज़ार में बेच दिये जाते हैं। 2 रुपये किलो का गेहूं खुले बाज़ार में जब 16 रुपये किलो के भाव बिकेगा तो अंधा मुनाफ़ा हाथ लगेगा।

पलवल में नये-नये तैनात हुए सीआईडी इंस्पेक्टर राजेन्द्र पाल को जब इस घोटाले की भनक लगी तो उन्होंने अपने सूत्रों से इस पर निगरानी शुरू कराई। दिनांक 27 अगस्त को इन्हें सूचना मिली कि कुसलीपुर स्थित एफसीआई गोदाम से ट्रक नं.एचआर-73-1337 सरकारी गेहूं के 500 कट्टे (वजन 250 क्विंटल) लेकर सायं 5,30 पर निकल रहा है। ट्रक का पीछा किया गया। पहले तो वह अनाज़ मंडी में आकर खड़ा हो गया, फ़िर बाला जी धर्म कांटे पर वजन करा कर वापस मंडी में ही आकर खड़ा हो गया। रात के करीब एक बजे यह दिल्ली के लिये रवाना हुआ। सीआईडी इंस्पेक्टर राजेन्द्रपाल ने ट्रक का पीछा किया और गदपुरी पुलिस चौकी पर आकर उसे रूकबा लिया और अपनी तहरीर पर थाना सदर पलवल में भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420, 467, 471 व 120 बी तथा आवश्यक वस्तु अधिनियम की धारायें 7, 10, 55 के तहत मुकदमा नम्बर 538 दर्ज़ करा दिया। माल सहित ट्रक को कब्ज़े में ले लिया गया तथा ड्राइवर क्लीनर को गिरफ़्तार कर लिया गया।

ड्राइवर द्वारा मौके पर उपलब्ध कराये गये काग़जात से यह तो पता चलता था कि बीपीएल कोटे का सरकारी माल ट्रक में है जो वितरण के लिये डिपुओं पर जाना है। परन्तु किन डिपुओं पर जाना है तथा रात के डेढ बजे वह पलवल ज़िले की सीमा से बाहर किस लिये जा रहा है, इसका कोई विवरण नहीं था। इन्हीं काग़जात से यह भी पता चला कि यह माल फूल सिंह डिपो होल्डर का है। उसके पास ट्रकों द्वारा माल को डिपुओं पर पहुंचाने का ठेका है। माल चूंकि ज़िला खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के द्वारा निकाला जाता है, इसलिये पुलिस अधीक्षक ने विभाग के सब इंस्पेक्टर आशीश राणा की पेशी मांगी। जब वह पेश होने लगा तो साथ ही साथ फूल सिंह भी पेश हो गया। असल में इन 5-7 घंटों में फूल सिंह ने गेहूं को फ़रीदाबाद ज़िले में ले जाने के फ़र्जी दस्तावेज़ तैयार कर लिये थे; उन्हीं के दम पर वह एसपी के सामने सीना ठोंक कर खड़ा हो गया। लेकिन 10 मिनट की पूछताछ में ही उसके दस्तावेज़ फ़र्जी साबित हो गये थे। इसी के आधार पर मुकदमें में धारा 467 व 471 जोड़ी गयी।

भरोसेमंद सूत्र बताते हैं कि आगे की पूछताछ में फूल सिंह ने उन सब पुलिस व खाद्य विभाग वालों का सारा कच्चा चिट्ठा खोल दिया जिनको हिस्सा-पत्ती व मंथली देकर पिछले कई बरसों से वह यह काला धंधा करता आ रहा था। इस काले धंधे में उसका खास सहयोगी है वरूण बंसल जिसके पास करीब 25 ट्रक हैं जो दिन-रात इसी के तरह की चोट बाज़ारी का धंधा करता है। इस सारे मामले में एक खास बात यह भी है कि एक ट्रक में केवल 250 कट्टे ही भरे जाने चाहियें थे लेकिन इस में दो ट्रकों का माल भरा था।

सरकार द्वारा ग़रीबों को कौड़ियों के भाव दिये जाने वाले राशन में सेंधमारी का यह तो मात्र एक छोटा सा नमूना है जो एक सीआईडी इन्स्पेक्टर की कर्त्तव्य परायणता एवं निष्ठा के चलते सामने आ पाया। वरना इस तरह का 90 प्रतिशत राशन सेंधमारी में ही निकल जाता है। इतना ही नहीं जो राशन डिपुओं पर पहुंचता है वही कौनसा ग़रीबों को मिल पाता है। फूल सिंह जैसे बड़े घाघ थोक में डकैती मारते हैं तो डिपु वाले परचून में यही काम करते हैं। लेकिन यह सारा काला कारोबार बिना विभागीय एवं पुलिस तथा प्रशासनिक अधिकारियों की मिलीभगत के बिना संभव नहीं। मौजूदा इस मामले में जो थोड़ी-बहुत सज़ा, यदि हो पाई तो फूल सिंह व वरूण बंसल को ही हो पायेगी।

न तो इसमें किसी बड़े अधिकारी को लपेटा जायेगा और न ही पुराने घोटलों की रिकवरी की जायेगी। सरकार एवं व्यवस्था के इसी लचर-पचर रवैये के चलते, कुछ दिन ठंडा रहने के बाद यह काला धंधा फ़िर से तेज़ गति से चलने लगेगा।

# रसोई गैस सब्सिडी क्यों छोडें ?

**एक** समय था जब संघी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की इतनी मिट्टी पलीद नहीं हुई थी। यह ललित मोदी, सुषमा स्वराज, वसुंधरा राजे, पंकजा मुंडे, व्यपमं घोटाले इत्यादि-इत्यादि के बहुत पहले की बात है तब 'विकास पुरुष' मोदी भारतीय मध्यम वर्ग के एक हिस्से की आंखों के तारे थे।

सुदूर अतीत के इस खुशनुमा समय में मोदी ने अपने चाहने वालों से यानी अमीरों से एक अपील की थी। उन्होंने अपील की थी कि रसोई गैस पर मिलने वाली सब्सिडी को अपनी इच्छा से छोड़ दें। इससे सरकार पर सब्सिडी का बोझ कम होगा और सरकार 'विकास' पर ज्यादा खर्च कर सकेगी। मोदी के इस सुर को ताल देते हुए सार्वजनिक क्षेत्र के तेल-गैस कम्पनी इंडियन ऑयल लिमिटेड ने एक नारा गढकर अपने सारे पेट्रोल पंपों पर बड़े-बड़े होर्डिंग पर टांग दिया-'चलो किसी गरीब की रसोई में खुशियां जोड़ें, एल.पी.जी. पर सब्सिडी छोड़ें'।

नरेन्द्र मोदी की अपील और उस पर गढ़े गये नारों का परिणाम क्या निकला? कितने लोग़ों ने रसोई गैस की सब्सिडी छोड़ी?

पिछले महीने खबर आई कि मोदी की अपील पर करीब साढ़े पांच लाख लोगों ने रसोई गैस पर सब्सिडी छोड़ दी। वाकई साढ़े पांच लाख की संख्या गौर करने लायक है। पर इस संख्या का वास्तविक मतलब क्या है यह तब पता चलेगा जब हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि देश में रसोई गैस की सब्सिडी पाने वालों की कुल संख्या क्या है? यह संख्या है करीब 15 करोड़। तकनीक तौर पर ज्यादा सही-सही कहें तो रसोई गैस के कुल करीब 15 करोड़ कनेक्शन में से करीब साढ़े पांच लाख कनेक्शन धारकों ने इस पर मिलने वाली सब्सिडी छोड़ दी।

15 करोड़ में साढ़े पांच लाख। यानी करीब दशमलव तीन सात प्रतिशत। दस हज़ार में केवल सैंतीस! यदि मोदी की अपील पर एक प्रतिशत ने भी गैस सब्सिडी छोड़ी होती तो उनकी संख्या करीब पंद्रह लाख होती। पर यहां तो वास्तविक संख्या उसकी भी एक तिहाई है।

भाजपा ने दावा किया है कि वह दुनिया की सब से बड़ी पार्टी है और उसके करीब आठ करोड़ सदस्य हैं। यह जग जाहिर है कि मोदी के मुरीदों में पूंजीपति वर्ग और उच्च मध्यम वर्ग की बड़ी संख्या है। सारे चुनावी सर्वेक्षण यह दिखाते हैं कि भाजपा और मोदी को वोट देने वालों में इन वर्गों में प्रतिशत ज़्यादा है। ऐसे में उम्मीद की जाती थी कि मोदी की अपील पर सारे पूंजीपति वर्ग और उच्चतम वर्गीय रसोई गैस सब्सिडी छोड़ देंगे। यदि ये सारे ऐसा करते तो सब्सिडी छोड़ने वालों की संख्या दो-चार प्रतिशत तो हो ही जाती देश में कार मालिकों की संख्या करीब तीन प्रतिशत है। ये तो सब्सिडी छोड़ ही सकते थे। भाजपा के मोदीभक्त कार्यकर्ताओं से भी यह उम्मीद की जाती थी कि वे 'विकास पुरुष' की खातिर यह बलिदान करेंगे।

पर ऐसा नहीं हुआ। और होना भी नहीं था।

पिछले ढाई दशकों में पूंजीवादी विकास का लक्ष्य यही पूंजीपति वर्ग और मध्यम वर्ग रहा है। उदारीकरण के इस दौर में पूरी बेशर्मी के साथ इसे बार-बार घोषित किया गया है। इसी के चलते सकल घरेलू उत्पाद में 6-8 प्रतिश की सारी वृद्धि का सारा फ़ायदा इन्हीं की जेब में गया है।

यह हर तरीके से हुआ है जिसमें एक तरीका सब्सिडी भी है। इन सालों में केवल गरीबों पर सब्सिडी में कटौती की बात होती रही है। अमीरों पर सब्सिडी तो बढ़ती ही गयी है। पिछले सालों में केन्द्र सरकार द्वारा हर साल चार-पांच लाख करोड़ रुपये का कर माफ़ कर देना इसका एक बड़ा उदाहरण है। यह सब इस कदर हुआ है कि इन वर्गों की इसकी आदत पड़ गयी है। वे इसे अपना अधिकार मानते हैं। पूंजीवादी अखबारों में ऐसे लेख धड़ल्ले से छपते हैं जिनमें गरीबों पर सब्सिडी में कटौती तथा अमीरों पर सब्सिडी में बढोत्तरी की मांग एक साथ की गयी होती है।

ऐसे में अमीर रसोई गैस पर सब्सिडी क्यों छोडें? क्या इसी के लिये उन्होंने मोदी को गद्दी पर बैठाया था? क्या इसी के लिये वे अपने आय के आंकड़ों में हेराफ़ेरी करते हैं? क्या उन्होंने धरम-करम का ठेका ले रखा है? मोदी को अपनी राजनीति चमकानी है तो चमकाएं पर वे अमीरों से बेज़ा मांग न करें!

**-नागरिक**

# इ पी एफ स्टाफ फैडरेशन ने पाया नागपाल से छुटकारा

फरीदाबाद। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन की युनिअनों के संघ इ पी एफ स्टाफ फैडरैसन ने बड़ी मुश्किल से ए डी नागपाल को अध्यक्ष पद से हटाकर उससे छुटकारा पाया है। अब संघ ने सुभाषिनी अली को अपना नया अध्यक्ष चुना है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन की न्यासी संस्था जिसे सेंट्रल बोर्ड आफ ट्रस्टी तथा संक्षेप में सी बी टी कहा जाता है, के सदस्य ए डी नागपाल को फैडरैसन ने लगभग बीस वर्ष पहले इस उम्मीद में अपना अध्यक्ष बनाया था कि वे सी बी टी सदस्य होने के रहते उनके स्टाफ के हितों की रक्षा करेंगे। लेकिन स्टाफ के हितों की बजाय वे स्टाफ के कुछ खास खास चमचों के सभी सही गलत कार्यों के लिए उन्हें ही समर्पित हो चुके थे जिस कारण आम स्टाफमें उनके व अनेक पदाधिकारियों के प्रति भारी रोष था । हिन्द मजदूर सभा के कोटे से सी बी टी में वर्षों से सदस्य बनकर जमे बैठे नागपाल को अध्यक्ष पद से हटाने की मुहिम वैसे तो कई वर्ष से जारी थी लेकिन उसके कुछ खास गुर्गों के रिटायर होने पर ये मुहीम अब जाकर सफल हुई है अन्यथा पहले इसके अपने मोहरे हर बार इस मुहिम को सफल नहीं होने देते थे। हालाँकि अभी भी कुछ रिटायर कर्मचारियों ने संघ के पदों पर अपने चमचों की बदौलत कब्ज़ा कर रखा है। संघ की अनेक बैठकों में केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त द्वारा खुलेआम इनके द्वारा व्यक्तिगत कार्य करवाने का खुलासा कई बार किया जा चुका था ।


# घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

**आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:**

**अन्य बिक्री केन्द्र :**

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. हेम बुक डिपो, नियर सैन्ट्रल लाईब्रेरी, न्यू कैम्पस,जे.एन.यू।
10. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब